9399

M. T. B. COLLEGE, SURAT
*Manuscripts Library*

No. Ref.
Ser. [illegible]

Title: Gaddha Gita

1311

Incomplete

C

| | | |
|---|---|---|
| Garbha Gita | | Title |
| | | Author |
| | | Editor |
| Sk | | Year, Vols. |
| | | Publisher |
| 1311 | Pages 3 & 4 | Remarks |

र्हं वनसेवने॥ नमोर्हं नेमते तिर्थ नमोर्हं क्रिय
यतेतप॥१४॥ नमोर्हं ज्ञानमौनेषु नमोर्हं देउ
धारण॥ नमोर्हं गायते गिते नमोर्हं निरहारी
णे॥१५॥ नमोर्हं पाकसुधंकृचन नमोर्हं नेसधा
रिणे॥ नमोर्हं धुम्रपानादि नमोर्हं देहदंउने॥
१६॥ यावद्बुद्धिविकारेण आत्मतत्वेन विद्यते॥
यंवज्ञानं च तत्वं च तावत्चितेस्थीरं नहीः॥१७॥ २

नज्ञाणातिमुक्तीर्नास्ती गुरुं विना ॥१०॥ कोटियज्ञ
कृते कर्मदानेचास्वर्ग जोरया ॥ गोदानंचसह
स्त्राणी मुक्तिर्नास्ति गुरु विना ॥११॥ नमोस्तं धर्मने
चारं नमोस्तं जटिधारने ॥ नमोस्तं कर्मधर्मज्ञे न
मोस्तं ईंद्रीये निग्रहे ॥१२॥ नमोस्तं धारनाध्याने
नमोस्तं मनसातजे तु ॥ नमोस्तं केदह्रारेन नमो
स्तं नसमलेपने ॥१३॥ नमोस्तं कोटियज्ञेन मनमो

आस्मातरे नवे सुधरूविजईजाय तेकृते ॥ प्रक्षालि
ते मणो मैले रूपे कोटिनी कृतने ॥१८॥ अर्जुन० ॥ आ
त्मातरे कथं सुधं कथं मलविमोचने ॥ मनो मैले सदा
कस्ते कथं नवति निर्मले ॥१९॥ श्रीभगवा० ॥ सुधार
त्माच तयोव्र भज्ञानाग्नी मलणासने ॥ मनः सुधं गु
रुवाक्यं पुनर्जन्मो नविद्यते ॥२०॥ अर्जुन० कर्माकर्म
द्वयो र्विज्ञेलोकोयं हउ बंधणातु ॥ केनकर्मचैज्ञानाम

६ प्रयोगेनलोकोमुच्यतिबंधनात॥२१॥योगिकर्मन्नाक
र्मंचज्ञानामप्यंतरेस्तथा॥ब्रह्माग्निरुजतेविजयोगि
रूपं नोन्नवेत॥२२योगिनांसहजानाद्जन्ममृत्युनवा
छिती॥विधिनिशेधरेहितेमविजयोगिनान्नवेत॥
२३॥सर्वसारमयिगितात्वत्पहंमोहदायिनी॥गु
ह्याद्गुह्यतरंध्यात्वागर्नगितावदंमंदत॥२४॥इति
श्रीगर्नगितासुपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगसास्त्रे ६

श्रीकृष्णार्जुनसंवादेगर्नगितासंपूर्णी॥ श्रीरस्तु॥